

अभिलेखीय साक्ष्यों में जयपुर रियासत का धार्मिक—सांस्कृतिक अध्ययन (1600 ई.–1900ई.)

मुकेश कुमार शर्मा
शोधार्थी

ज.ना. व्यास वि.वि.जोधपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश— राजस्थान के पूर्वोत्तर में अरावली पर्वत श्रंखला के मध्य स्थित प्राचीन जयपुर रियासत अपने गौरवशाली इतिहास और समृद्धशाली सांस्कृतिक विरासत के लिये प्रसिद्ध रहा है। इस प्राचीन भू—भाग ने अनेक संस्कृतियों के उत्थान से साक्षात्कार किया है। यहाँ का इतिहास, कला वैभव, साहित्य, धर्म, दर्शन दीर्घकालीन धार्मिक व सांस्कृतिक जनजीवन की वे धरोहर है, जो तत्कालीन मानवीय जीवन के सभी रंग रूपों से वर्तमान का परिचय कराती है।

जयपुर रियासत में 16 वी से 19 वी शताब्दी तक अभिलेखीय निर्माण की एक दीर्घकालीन सुव्यवस्थित परम्परा रही है। यहाँ के शासकों, सामंतों एवं समृद्ध व्यक्तियों के द्वारा अपनी रुचि एवं उपलब्ध साधनों के आधार पर ये अभिलेख शिलालेखों, स्मारकों और ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण करवाये गये। जिससे हमें तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक रिथ्ति की जानकारी प्राप्त होती है। अभिलेखों के रूप में उत्कीर्ण अतीत की यह समृद्ध विरासत न केवल रियासतकालीन जयपुर के सामाजिक—सांस्कृतिक व्यवस्था का ही ज्ञान कराते है, बल्कि जयपुर के इतिहास निर्माण पर भी एक महत्वपूर्ण प्रकाश डालते है।

मुख्य शब्द — शिलालेख, अभिलेख, स्मारक, बावड़ी, धार्मिक, धर्म सम्प्रदाय, सांस्कृतिक, जयपुर रियासत।

प्रस्तावना— जयपुर रियासत के कछवाहा वंशी शासकों ने प्राचीन भारतीय शासकों की भाँति शिलालेख एवं स्मारक निर्माण परम्परा में अपनी महत्ती रुची दिखाई है। यहाँ के शासकों ने अपने समय की विशिष्ट उपलब्धियों जैसे युद्ध में विजयी होने, यशोगाथाओं, वंशक्रम, तिथिक्रम और तत्कालीन सामाजिक व धार्मिक रिथ्ति की जानकारी को चिरस्थायी बनाये रखने हेतु अभिलेखों को उत्कीर्ण करवाया। ये अभिलेख हमें गढ़, महल, हवेली, मंदिर, स्मारक, धर्मशाला, बावड़ी, कुँए, तालाब आदि स्थानों से प्राप्त हुये हैं जो तत्कालीन इतिहास को जानने के सबसे प्रमाणिक एवं विश्वसनीय स्रोत माने जाते हैं। वर्तमान में कुछ शिलालेख प्रशासनिक संरक्षण के अभाव में जीर्ण—शीर्ण अवस्था में हैं, जबकि कुछ शिलालेख अपनी यथार्थता में उपलब्ध होते हैं। शोध से प्राप्त अनुच्छये अभिलेखीय साक्ष्य जयपुर रियासत के इतिहास निर्माण पर एक नवीन अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. मौलिक तथ्यों और शोध सामग्री के आधार पर रियासतकालीन जयपुर के धार्मिक एवं सांस्कृतिक जन—जीवन का अध्ययन करना।
2. अभिलेखों में उल्लेखित राजनैतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन कर उसके सुव्यवस्थाओं का पता लगाकर वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।
3. रियासतकालीन शिलालेखों में वर्णित मंदिरों, देवी—देवताओं, धर्म सम्प्रदायों, साधु संतो, धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं और विभिन्न प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों का तत्कालीन धार्मिक—सांस्कृतिक महत्व की दृष्टि से विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
4. नवीन अन्वेषण पर आधारित ऐतिहासिक एवं पुरा महत्व के शिलालेखों से प्राप्त ऐतिहासिक जानकारी का अन्वेषण कर जयपुर के इतिहास निर्माण पर नवीन अन्तर्दृष्टि प्रदान करना।

साहित्यालोकन

जयपुर रियासत के इतिहास से संबंधित प्रमाणिक ग्रंथों व लेख प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर एवं शाखा जयपुर में उपलब्ध मूल स्त्रोतों, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध सामग्री तथा शोध यात्रा के दौरान स्वयं के द्वारा अवलोकन कर संकलित किये गये अभिलेखीय साक्ष्यों का तथ्यपूर्वक अध्ययन कर उपयोग किया गया है। शोध प्रबंध में निम्न उपलब्ध साहित्य का भी अवलोकन एवं विश्लेषण किया गया है। :-

- डॉ. गोपीनाथ शर्मा की कृति **राजस्थान इतिहास के स्रोत** जो राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर से 2015 प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत ग्रंथ में राजस्थान के विभिन्न रियासतों से संबंधित प्राचीन काल से लेकर 18 वीं शताब्दी तक के अभिलेखों का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है।
- प्रो. रत्नलाल मिश्र की पुस्तक **'एपिग्राफिकल स्टडीज ऑफ राजस्थान इन्सक्रिपशन्स'** में आदिकाल से लेकर 19 वीं सदी तक के राजस्थान के विभिन्न स्थानों से प्राप्त अभिलेखीय साक्ष्यों का तथ्यपूर्ण वर्णन प्राप्त होता है। जिसमें जयपुर क्षेत्र से प्राप्त विभिन्न शिलालेखों का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है।
- प्रो. बी.एल. पनगड़िया की कृति **'पोलिटिकल-सोशियल इकोनोमिक एण्ड कल्वरल हिस्ट्री ऑफ राजस्थान'** में 11 वीं– 20 वीं सदी में राजस्थान में मुगल और ब्रिटिश प्रभावस्वरूप प्रशासनिक आर्थिक, सामाजिक क्षेत्रों के साथ-साथ धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में हुये परिवर्तनों का तथ्यपूर्ण विवेचना की गई है।
- डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर की पुस्तक राजस्थान के राजघरानों का सांस्कृतिक अध्ययन जो पंचशील प्रकाशन जयपुर से 1991 ई. में प्रकाशित है। प्रस्तुत ग्रंथ में राजस्थान के राजघरानों से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी के साथ-साथ तत्कालीन समय के धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश किया गया है।
- प्रो.के.सी. जैन की पुस्तक **'एनसियेन्ट सिटीज एण्ड टाउन्स ऑफ राजस्थान'** जो राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर से 2018 में प्रकाशित है। प्रस्तुत ग्रंथ में राजस्थान के प्राचीन नगरों (मुख्यतया प्राचीन आमेर रियासत) और वहां से प्राप्त पुरातात्त्विक स्त्रोतों का अध्ययन प्रस्तुत कर तत्कालीन प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक-सांस्कृतिक जनजीवन सहित सभी पहलूओं का उल्लेख किया गया है।

राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस के विभिन्न प्रोसेडिंग्स, अभिलेखागारों से प्राप्त पुरालेखीय एवं अपुरालेखीय रिकॉर्ड, द्वितीयक स्रोतों एवं अन्य अध्ययन सामग्री के आधार पर 16 वीं से 19 वीं शताब्दी तक के रियासतकालीन जयपुर के धार्मिक एवं सांस्कृतिक जन जीवन का तथ्यपरक अध्ययन किया गया है।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान भारत के उन प्रदेशों में से एक है, जिसका नाम अपनी प्राचीन गौरवमय परम्परा के लिए प्रसिद्ध रहा है। इसी राजस्थान की जयपुर रियासत 16 वीं से 19 वीं शताब्दी के दौरान अपने रूप निर्माण, रंग –योजना तथा स्थापत्य आदि के लिए विश्व विख्यात है। जयपुर रियासत में जयपुर, शेखावाटी क्षेत्र के सीकर, नवलगढ़, खंडेला, खेतड़ी, जोबनेर, बगरू, सामोद, चौमूं, अचरोल, मनोहरपुरा, बरनाला, ईसरदा, खाचरियावास, खाटू, डिग्गी, मंडावा, डूँडलोद, बिसाऊ, उनियारा, सिवाड़, चेनपुरा, नायला, पाटण, बांसखो, कानौता, दूदू, झिलाय, गीजगढ़, दूनी, धूला और आदि सीमावर्ती क्षेत्र सम्मिलित थे। इस रियासत के अभिलेखीय साक्ष्यों में मंदिर निर्माण सम्बन्धी कार्य देवी (शक्ति) पूजा, देवता, साधु-सन्त एवं धार्मिक

सम्प्रदाय, प्रतीक चिन्हों, धर्म एवं दान-पुण्य की प्रवृत्ति विशेषकर (भूमिदान, अन्नदान तथा जलदान) और ईश्वरीय प्राककथन आदि लोक कल्याणकारी कार्यों आदि का उल्लेख किया गया है जिससे हमें धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।¹

जयपुर रियासत में सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य की समयावधि के दौरान यहाँ के शासकों द्वारा शताब्दी के मध्य की समयावधि के दौरान मंदिर निर्माण सम्बन्धी कार्य करवाये जाने के प्रमाण मिले हैं। चौमूँ में प्राचीन गढ़ के सामने स्थित सीताराम जी के मंदिर के शिलालेख² संवत् 1803 (1746ई.) से विदित होता है कि चौमूँ के ठाकुर जोधसिंह नाथावत के समय खंडेलवाल महाजनों द्वारा इस मंदिर का निर्माण करवाया गया। सामोद के समीप महार स्थित लक्ष्मीनाथ जी के मंदिर के स्तम्भ लेख³ संवत् 1713 (1656ई.) से जानकारी प्राप्त होती है कि महार के प्रतापी व साहसी शासक रावत अखैराम और उनके पुत्र कुंवर हरदैराम ने संभवतः इस मंदिर का निर्माण अथवा जीर्णोद्धार करवाया हो। जयपुर के काणौता के नजदीक स्थित सांभरिया गाँव में सीताराम जी के मंदिर के शिलालेख⁴ संवत् 1792 (1735ई.) से ज्ञात होता है यहाँ के ठाकुर चाँद सिंह के राज्य में हरनाथ सिंह द्वारा 1735 ई. में सीताराम जी के इस मंदिर का निर्माण करवाया गया था। जमुवारामगढ़ स्थित प्राचीन गणेश मंदिर के शिलालेख⁵ संवत् 1819 (1762ई.) से यह महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है कि जयपुर के महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम के शासन काल में उनके सेवक कोतवाल गुलाब राय सिसोदिया तथा नायब भैय्या दूल्हराय द्वारा गणेश जी के इस मंदिर का निर्माण करवाया गया।

इसी परिप्रेक्ष्य में करौली के शहर कस्बे में तालाब के किनारे स्थित शिव मंदिर के शिलालेख⁶ संवत् 1824 (1767ई.) से ज्ञात होता है कि इस मंदिर का निर्माण गुमान सिंह के पुत्र बख्तावर सिंह की बड़ारण (दासी) अणसी नगोहर ने करवाया था। मनोहरपुर (शाहपुरा) स्थित श्री चतुर्भज जी के मंदिर का शिलालेख⁷ संवत् 1674 (1617ई.) से जानकारी मिलती है कि इस मंदिर की नींव पृथ्वी चन्द के समय लगी थी।

जयपुर रियासतकालीन इन अभिलेखीय साक्ष्यों में तत्कालीन समय के लोक देवताओं का उल्लेख भी आवश्यक रूप से होता है। चौमूँ के सीताराम जी के मंदिर का शिलालेख से सीताराम जी, महार स्थित लक्ष्मीनाथ मंदिर के शिलालेख से लक्ष्मीनाथ जी, जमुवारामगढ़ के गणेश मंदिर के शिलालेख से गणेश जी और यहाँ के मुरलीमनोहर जी के मंदिर के शिलालेख⁸ से मुरलीमनोहर अर्थात् कृष्ण जी, दौसा के नृसिंह मंदिर के शिलालेख⁹ से नृसिंह जी, चक (मनोहरपुर) के शिव मंदिर के शिलालेख से शिव आदि देवता तत्कालीन समाज के लोगों की आस्था का केन्द्र थे।

देवताओं के अलावा सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान जयपुर रियासत के शिलालेखों से शक्ति (देवी) पूजा के साक्ष्य भी मिले हैं। इस सम्बन्धी केवल मात्र दो ही शिलालेख प्राप्त हुये हैं। जयपुर के अचरोल स्थित चामुण्डा देवी मंदिर के शिलालेख¹⁰ संवत् 1820 (1763ई.) से ज्ञात होता है कि यहाँ के

बलभद्रोत—कछवाहा शासक रणजीत सिंह ने चामुण्डा देवी के इस मंदिर का निर्माण करवाया था। जमुवारामगढ़ के जमवाय माता के मंदिर में स्थापित शिलालेख¹¹ संवत् 1845 (1788ई.) से भी शक्ति (देवी) के रूप में दुर्गा के रूप का परिचय होता है। शक्ति पूजा की इसी श्रृंखला में मोरीजा (चौमू) के ठाकुर फतेह सिंह के स्मारक शिलालेख¹² संवत् 1885 (1828 ई.) की भीतरी दीवारों पर अनेक चित्र उत्कीर्ण हैं उनमें से एक महिषासुर—मर्दिनी का चित्र भी है। इससे ज्ञात होता है कि तत्कालीन समय में शक्ति पूजा का जन सामान्य में काफी महत्व था।

जयपुर रियासतकालीन इन अभिलेखीय साक्षों के अन्तर्गत अनेक साधु—संतो व सम्प्रदायों का उल्लेख भी होता है। इस संदर्भ में सर्वप्रथम बांसखों (जयपुर) के बिहारी जी के मंदिर के शिलालेख¹³ संवत् 1937 (1880ई.) से ज्ञात होता है कि बांसखों की ठकुरानी जगमालोत जी ने बिहारीजी का मंदिर बनवाकर निर्मार्क सम्प्रदाय के सन्त हरीदास को बिहारी जी की सेवा करने हेतु सुपुर्द किया था। अमरसर (जयपुर) जैन मुनि कनक सोम की छतरी के समाधि लेख¹⁴ संवत् 1662 (1605ई.) से जानकारी प्राप्त होती है कि जैन सम्प्रदाय के प्रसिद्ध मुनि कनक सोम ने 1605 ई. में समाधि ली थी। इसी प्रकार नरायणा (नरैना) में दादू दयाल के दादू सम्प्रदाय के साक्ष्य मिले हैं। यही पर इस सम्प्रदाय की प्रधान पीठ स्थित है।

सत्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी कालीन जयपुर रियासत के शिलालेखों से पूर्व में उल्लेखित देवताओं के अतिरिक्त अन्य देवताओं की जानकारी भी प्राप्त होती है। उपलब्ध साक्ष्य में कटराथल (सीकर) के शिलालेख¹⁵ से सूर्य की आकृति बनी होने की जानकारी मिलती है। तत्पश्चात् चन्द्र देवता का उल्लेख भी मिलता है। जमुवारामगढ़ के जमवाय माता मंदिर के शिलालेख, डिग्गी (टोंक) गढ़ के बाहर स्थित शिलालेख से चन्द्र देवता की पुष्टि होती है। इसके साथ ही नन्दी देवता का उल्लेख भी शहर (करौली) के तालाब वाले शिव मंदिर का स्मारक—शिलालेख व पचेवर (दूदू) के तालाब किनारे स्थित स्मारक शिलालेख¹⁶ से होता है। अनुमानतः पूर्व में उल्लिखित देवताओं की भाँति इनका भी धार्मिक महत्व रहा होगा।

जयपुर क्षेत्र के अभिलेखीय साक्षों में प्रतीक चिन्हों का प्रयोग भी हुआ है। अचरोल के ठाकुर शिवसिंह की छतरी के शिलालेख¹⁷ में एक योद्धा को घोड़े पर सवार और उसके सामने स्त्री की आकृति प्रदर्शित की गई है। महार के शासकों की छतरियों में सफेद संगमरमर के पत्थर पर शंख, गदा, सर्पनुमा आकृतियाँ प्रतीक चिन्हों के रूप में मिलते हैं। लदाणा (फागी) के जुझार शिलालेख¹⁸ से भी घुड़सवार योद्धा की आकृति के रूप में प्रतीक चिन्ह का उल्लेख मिलता है।

अभिलेखीय साक्षों में जयपुर रियासत की धार्मिक—सांस्कृतिक जीवन के अन्तर्गत धर्म एवं दान—पुण्य का काफी महत्व है। हमारे आदि ग्रन्थ ऋग्वेद की अनेक ऋचायें दान की महिमा से भरी पड़ी हैं। इस रियासत के क्षत्रिय नरेशों द्वारा धर्मशास्त्रानुसार भूमिदान, अन्नदान और जलदान दिये जाते रहे हैं। भूमिदान के

संदर्भ में बांसखों (जयपुर) कि बिहारी जी के मंदिर के शिलालेख¹⁹ संवत् 1937 से ज्ञात होता है कि यहाँ की ठकुरानी जगमालोत ने भगवान बिहारी के भोग (प्रसाद) के लिए 51 बीघा भूमि दान (उदिक) की थी । तृँगा के सूरज मल शेखावत के स्मारक—शिलालेख²⁰ संवत् 1844 से भी ठाकुर सूरजमल शेखावत की छतरी के वास्ते 25 बीघा भूमि दरबार से दान देने के प्रमाण मिले हैं। इस रियासत में अन्दान सम्बन्धी केवल एक ही शिलालेख बांसखों के बिहारी जी के मंदिर के रूप में प्राप्त हुआ है जिसमें वहाँ की ठकुरानी के द्वारा बिहारी जी के भोग के वास्ते धी , बाजरा, चीनी, पतासा, तेल, आटा, नमक, गुड़, चौला, धनियाँ आदि के दान का उल्लेख मिलता है। जयपुर रियासत के राजघरानों से जुड़ी रानियों, राजकुमारियों, खवासनों, पासवानों, धायों ने भी लोकोपकार हेतु जलाशयों , कुण्डों , बावड़ियों का निर्माण करवाकर इस धार्मिक—सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह किया गया है।²¹ इस श्रृंखला में अचरोल (जयपुर) की बावड़ी के शिलालेख²² संवत् 1920 से प्रमाणित होता है कि ठाकुर रणजीत सिंह ने अपनी पुत्री ईदकँवर विवाहोपरान्त (फेरमोड़ा) आने पर बावड़ी का निर्माण करवाकर दान—पुण्य की प्रवृत्ति और धार्मिक आस्था का परिचय दिया है। संवत् 1886 ई. के पुराना घाट (जयपुर) के शिलालेख²³ से ज्ञात होता है कि महाराजा सवाई जयसिंह की धाय रंगबरस ने पुण्यार्थ महादेव जी का कुण्ड बनवाया। इसी प्रकार जोबनेर के रूपकँवरि बावड़ी शिलालेख²⁴ संवत् 1705 से ज्ञात होता है कि यहाँ के शासक मनोहर दास की पुत्री रूपकँवरि ने पुण्यार्थ बावड़ी का निर्माण करवाया था।

जयपुर रियासत के अभिलेख ईश्वरीय प्राककथन से प्रारम्भ होते हैं जैसे श्रीराम , श्री गणेशाय नमः, श्री चतुर्भुज जी, श्री सीताराम जी, श्रीकृष्णाय नमः आदि ।

इस प्रकार अभिलेखीय साक्ष्यों में जयपुर रियासत के धार्मिक—सांस्कृतिक जीवन की झाँकी विविध रूपों में देखने को मिलती है।²⁵ यह अभिलेख शासकीय है जो हमें तत्कालीन धार्मिक—सांस्कृतिक व्यवस्था से अवगत करवाते हैं। इनकी पुष्टि समसामयिक साहित्य के अध्ययन से स्वतः ही हो जाती है।

संदर्भ :—

1. मनोहर, राघवेन्द्र सिंह, राजस्थान के राजघरानों का सांस्कृतिक इतिहास, पंचशील प्रकाशन जयपुर, 1991 पृ. 28 ।
2. चौमूँ (जयपुर) स्थित सीताराम जी के मंदिर का शिलालेख संवत् 1803 (1746ई.) ।
3. महार (सामोद) स्थित लक्ष्मीनाथ जी के मंदिर का स्तम्भ लेख संवत् 1713(1656ई.) ।
4. सांभरिया (काणौता, जयपुर) स्थित सीताराम जी के मंदिर का शिलालेख संवत् 1792 (1735ई.) ।
5. जमुवारामगढ़ स्थित प्राचीन गणेश मंदिर का शिलालेख संवत् 1819 (1762 ई.) ।
6. शहर (करौली) के तालाब स्थित शिव मंदिर का शिलालेख सवंत् 1824 (1767ई.) ।

7. मनोहरपुर (शाहपुरा) स्थित श्री चतुर्भुज जी के मंदिर का शिलालेख संवत् 1674 (1617ई.)
8. जमुवारामगढ़ स्थित मुरलीमनोहर जी के मंदिर का शिलालेख संवत् 1938 (1881 ई.)
9. दौसा के नृसिंह मंदिर का शिलालेख संवत् 1876 (1819 ई.)।
10. अचरोल (जयपुर) स्थित चामुण्डा देवी मंदिर का शिलालेख संवत् 1820 (1763 ई.)।
11. जमुवारामगढ़ में जमवाय माता के मंदिर में स्थापित षिलालेख संवत् 1845 (1788 ई.)।
12. मोरीजा स्थित ठाकुर फतेहसिंह का छतरी –स्मारक संवत् 1885 (1828ई.)।
13. बांसखो (जयपुर) स्थित बिहारी मंदिर का शिलालेख संवत् 1937 (1880ई.)।
14. अमरसर (जयपुर) स्थित जैन मुनि कनक सोम की छतरी का लेख संवत् 1662 (1605 ई.)
15. कटराथल(सीकर) का शिलालेख संवत् 1824 (1767ई.)।
16. पचेवर (दूदू) के तालाब स्थित स्मारक –शिलालेख संवत् 1928 (1871 ई.)
17. अचरोल स्थित ठाकुर शिव सिंह की छतरी का शिलालेख संवत् 1819 (1762ई.)।
18. लदाणा (फागी) का जुझार शिलालेख संवत् 1856 (1799 ई.)
19. बांसखो (जयपुर) स्थित बिहारी मंदिर का शिलालेख संवत् 1937 (1880ई.)।
20. तूंगा स्थित सूरजमल शेखावत का स्मारक शिलालेख संवत् 1886 (1829 ई.)।
21. व्यास, श्यामाप्रसाद, राजस्थान के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर, 1986, पृ. 71।
22. अचरोल स्थित बावड़ी का शिलालेख संवत् 1920 (1863ई.)।
23. पुराना घाट (घाट की गुणी) जयपुर स्थित महादेव कुण्ड का शिलालेख संवत् 1886 (1829ई.)।
24. जोबनेर स्थित रूपकुँवरि की बावड़ी का शिलालेख संवत् 1704 (1647ई.)।
25. शर्मा, गोपीनाथ, सोशल लाइफ इन मेडिविल राजस्थान, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल एजुकेशन पब्लिशर्स आगरा 1968, पृ. 91।